Deeni Mahol Se Rokne Ka Nuqsaan (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 324
Weekly Booklet : 324

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब
''नेकी की दा'वत'' की एक क़िस्त बनाम

दीनी माह़ोल से रोकने का नुक़्सान

सफ़ह़ात 28

क्या बेटा भी कभी बाप को मारता है ? 08

मौत के बा'द की होशरुबा मन्ज़र कशी 12

मरने से पहले शामत 19

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **दीनी माहौल से रोकने का नुक़्सान**

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल अव्वल **1445** हि., सितम्बर **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"दीनी माह़ोल से रोकने का नुक़्सान"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِرج ٥١ص١٣٨دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

येह मज़्मून ''नेकी की दा'वत'' के सफ़ह़ा 544 ता 565 से लिया गया है।

दीनी माह़ोल से रोकने का नुक़्सान

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 26 सफ़ह़ात का रिसाला : ''**दीनी माह़ोल से रोकने का नुक़्सान**'' पढ़ या सुन ले उसे हमेशा दीनी माह़ोल से वाबस्ता रख और मां बाप समेत उस की बे ह़िसाब बख़्शिश फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (جامع صغیر، ص280، حدیث:4580)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मरने से क़ब्ल नौ जवान की दाढ़ी घर वालों ने काट डाली !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयों ! सद करोड़ अफ़्सोस ! ह़ालात दिन ब दिन बिगड़ते चले जा रहे हैं, एक त़रफ़ मग़रिबी तहज़ीब की यलग़ार, फ़ैशन की त़ूमार, फ़िल्म बीनी के लिये घर घर टीवी, इन्टरनेट और वी सी आर है तो बद क़िस्मती से दूसरी त़रफ़ मुसल्मान कहलाने वाले अ़मलन सुन्नतों से बेज़ार नज़र आ रहे हैं ! दा'वते इस्लामी से वाबस्ता एक **नौ जवान आ़शिक़े रसूल** जिस की उ़म्र ब मुश्किल 20 साल होगी, दाढ़ी जब से आई रख ली थी, बेचारा ख़ून के सरत़ान (या'नी ब्लड कैंसर। BLOOD

CANCER) में मुब्तला हो गया। मैं (या'नी सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ) उस की इयादत के लिये अस्पताल पहुंचा, बेचारा ज़िन्दगी और मौत की कश्मकश में था.....ज़बान साथ नहीं दे रही थी.....दाढ़ी चेहरे से उतार ली गई थी, मैं चौंका.....उस मज़्लूम ने चेहरे की तरफ़ ब मुश्किल तमाम हाथ उठाया और इशारे से फ़रियाद की.....मैं इतना समझ सका गोया वोह कह रहा था **"मैं ने مَعَاذَاللہ नहीं मुंडवाई"** मेरे घर वालों ने नींद या बेहोशी की हालत में मेरी दाढ़ी साफ़ कर डाली है। आह ! चन्द ही दिनों के बा'द वोह दुखियारा दुन्या से चल बसा। **अल्लाह** पाक मर्हूम की बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए और उस की दाढ़ी साफ़ कर डालने वाले को तौबा की सआ़दत बख़्शे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

रूह में सोज़ नहीं, क़ल्ब में एहसास नहीं कुछ भी पैग़ामे मुहम्मद का तुम्हें पास नहीं

मुस्लमान कहलाने वालों की सुन्नतों से दूरी

अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! कैसा नाज़ुक दौर आ पहुंचा है कि आज मुसल्मान कहलाने वाले अपनी औलाद को बिलजब्र **सुन्नतों** से दूर रखते हैं बल्कि **सुन्नतों** पर अ़मल करने पर बसा अवक़ात तरह़ तरह़ की सज़ाएं देते हैं, ऐसे ऐसे **दिल ख़राश वाक़िआ़त** देखे गए कि बस ख़ुदा की पनाह। कई **नौ जवान इस्लामी भाइयों** ने दीनी माहौल से **मुतअस्सिर** हो कर दाढ़ी रख ली तो ख़ानदान भर में गोया **ज़ल्ज़ला** आ गया ! अगर धोंस धमकी और मारपीट से बाज़ न आए तो दाढ़ी रखने के सबब बेचारे घरों से निकाल दिये गए, नींद की हालत में आ़शिक़ाने रसूल की दाढ़ियों पर क़ैंचियां चला दी गईं। दा'वते इस्लामी के दीनी काम के आग़ाज़ से पहले का वाक़िआ़ है, एक नौ जवान सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के पास आने जाने, उठने

बैठने लगा, उस पर माहोल का असर पड़ने लगा। उस ने घर पर आते जाते ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ'' कहना शुरूअ़ कर दिया, बा'ज़ अवक़ात दौराने गुफ़्तगू उस ने ''اِنْ شَآءَاللّٰه'' कह दिया ! मुसल्मान कहलाने वाले वालिदैन के कान खड़े हो गए ! बाज़पुर्स शुरूअ़ हो गई, चुनान्चे उस से घर में सुवाल हुवा : बेटा ! बात क्या है कि आज कल सलाम करने और اِنْ شَآءَاللّٰه कहने लग गया है ! उस ग़रीब ने सुन्नतों के अदना ख़ादिम सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ का नाम ले दिया, बस खेल ख़त्म, उसे सख़्ती के साथ रोक दिया गया कि ख़बरदार ! आज के बा'द इस ''**मुल्ला**'' की सोहबत में तुझे नहीं रहना ! आख़िरे कार वोह बेचारा मॉडर्न बन गया।

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये हर एक हाथ में पथ्थर दिखाई देता है

दीनी माहोल से रोका तो हेरोइन्ची बन गया, बाप पछता रहा है

इसी से मिलता जुलता एक और इ़ब्रत अंगेज़ वाक़िआ़ सुनिये, चुनान्चे एक नौ जवान ग़ालिबन 1988 ई. में दा'वते इस्लामी के **दीनी माहोल** से वाबस्ता हुवा। नमाज़ों की पाबन्दी के साथ साथ चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर पर इमामा शरीफ़ अपनी बहारें दिखाने लगा। उस ने मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ना भी शुरूअ़ कर दिया। उस का तअ़ल्लुक़ एक मॉडर्न और अमीर घराने से था, घर वालों को उस की ज़िन्दगी में आने वाला **मदनी इन्क़िलाब** समझ में न आया चुनान्चे उस की मुख़ालफ़त शुरूअ़ हो गई, त़रह़ त़रह़ से उस की दिल आज़ारियां की जातीं, सुन्नतों पर चलने की राह में रुकावटें खड़ी की जातीं और **दा'वते इस्लामी** का दीनी माहोल छोड़ने पर मजबूर किया जाता। वोह कभी कभार बे बस

हो कर फ़रियाद करता कि मुझे इस दीनी माहोल से दूर न करो वरना पछताओगे, मगर उस की किसी ने न सुनी। मुख़ालफ़त का येह सिल्सिला तक़रीबन तीन साल तक चलता रहा बिल आख़िर तंग आ कर उस ने घर वालों के सामने हथियार डाल दिये और दाढ़ी शरीफ़ मुंडवा कर दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल को "ख़ैर आबाद" कह दिया। बड़े भाई चूंकि डॉक्टर थे इस लिये इसे भी डॉक्टर बनने कि लिये एक मेडीकल कॉलेज में दाख़िल करवा दिया गया। जहां वोह हॉस्टेल (इक़ामत गाह) में बुरी सोहबत की नुहूसतों का शिकार हो कर चरस पीने लगा और सख़्त बीमार हो गया, घर वाले उसे वापस ले आए।

वालिद साहिब ने इलाज पर लाखों रुपै ख़र्च कर डाले मगर न सिह़्ह़त याब हुवा न ही सुधरा बल्कि अब वोह हेरोइन का नशा करने लगा। कसरत से नशा करने की वज्ह से वोह सूख कर कांटा हो गया, दांतों की सफ़ेदी ग़ाइब हो कर उन पर कालक की तह चढ़ गई और अब ता दमे तह़रीर उस की ह़ालत पागलों की सी हो चुकी है। **अल्लाह** की रह़मत से अब वालिद साहिब दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो चुके हैं, और बेचारे बहुत पछता रहे हैं कि काश! उस वक़्त मुझे दा'वते इस्लामी की **अहम्मिय्यत** समझ में आ जाती और मैं अपने बेटे को दा'वते इस्लामी के **दीनी माहोल** से दूर न करता तो शायद आज मुझे येह दिन न देखने पड़ते। मगर "अब पछताए क्या होत जब चिड़ियां चुग गईं खेत।" **अल्लाह** तआ़ला उस नौ जवान को नशे की आ़दते बद छोड़ कर फिर से **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

औलाद की दुरुस्त तरबियत कीजिये वरना पछताएंगे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस सच्चे वाक़िअे में उन वालिदैन के लिये इ़ब्रत ही इ़ब्रत है जो अपनी औलाद को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत, आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत नीज़ दाढ़ी और इ़मामा शरीफ़ सजाने, सुन्नतों भरा लिबास अपनाने से रोकते और सुन्नतों पर अ़मल करने पर बार बार टोकते बल्कि दीनी माह़ोल से दूर होने पर मजबूर करते हैं, याद रखिये ! आप का प्यारा बेटा, आप के जिगर का टुकड़ा और अपनी अम्मी की आंखों का तारा ही सही लेकिन येह मत भूलिये कि वोह **अल्लाह** पाक का बन्दा, उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का उम्मती और इस्लामी मुआ़शरे का एक फ़र्द है। अगर आप की तरबियत उसे **अल्लाह** पाक की दुरुस्त त़रीक़े पर इ़बादत, **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें और इस्लामी मुआ़शरे में उस की ज़िम्मेदारी न सिखा सकी तो उसे अपना इत़ाअ़त गुज़ार फ़रज़न्द देखने के सुनहरे ख़्वाब भी मत देखिये क्यूं कि येह इस्लाम ही तो है जो एक मुसल्मान को अपने वालिदैन की इत़ाअ़त और उन के ह़ुक़ूक़ की बजा आवरी का दर्स देता है। देखा येह गया है कि जब औलाद की तरबियत से ग़फ़्लत के असरात सामने आते हैं तो येही वालिदैन हर कस व नाकस के सामने अपनी औलाद के बिगड़ने का रोना रोते दिखाई देते हैं, उन्हें येह नहीं भूलना चाहिये कि औलाद को इस ह़ाल तक पहुंचाने में ख़ुद उन का अपना ही हाथ है। उन्हों ने अपने बच्चे को ABC बोलना तो सिखाया मगर क़ुरआन पढ़ना न सिखाया, मग़रिबी तहज़ीब के त़ौर त़रीक़े तो समझाए मगर रसूले अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतें न सिखाईं, जनरल नॉलेज (मा'लूमाते आ़म्मा) की **अहम्मिय्यत**

पर तो उस के सामने घन्टों लेक्चर दिये मगर फ़र्ज़ दीनी उ़लूम के हुसूल की रग़बत न दिलाई, उस के दिल में माल की **महब्बत** तो डाली मगर इश्के़ रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्अ़ न जलाई, उसे दुन्यवी ना कामियों का ख़ौफ़ तो दिलाया मगर क़ब्र व ह़श्र के इम्तिह़ान की नाकामी के भयानक नताइज से न डराया, उसे "हेलो ! हाउ आर यू !" कहना तो सिखाया मगर सलाम करने का सह़ीह़ त़रीक़ा न बताया ।

इरतिकाबे गुनाह की मादर पिदर आज़ादी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! इरतिकाबे गुनाह की मादर पिदर आज़ादी, केबल और इन्टरनेट की दस्तयाबी, रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों की आबादी और बिगड़ा हुवा घरेलू माह़ोल, येह सब कुछ मिल कर किरदार की अ़ज़मतों को बे इन्तिहा दाग़दार कर देते हैं और फिर ऐसे इन्सान से पाकीज़ा अफ़्आ़ल का सुदूर मुह़ाल न सही मगर निहायत दुश्वार ज़रूर हो जाता है । इस लिये वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद की ज़ाहिरी ज़ेबो ज़ीनत, अच्छी ग़िज़ा, उ़म्दा लिबास और दीगर ज़रूरिय्यात की कफ़ालत (या'नी ज़िम्मेदारी निभाने) के साथ साथ उन की दीनी तरबियत के लिये भी कोशां रहें, और सिर्फ़ औलाद ही की नहीं अपनी इस्लाह़ की भी फ़िक्र करनी चाहिये क्यूं कि जो ख़ुद डूब रहा हो वोह दूसरों को क्या बचाएगा ! जो ख़ुद ख़्वाबे ग़फ़्लत में हो वोह दूसरों को क्या जगाएगा, जो ख़ुद पस्तियों की त़रफ़ लुढ़क रहा हो वोह किसी और को बुलन्दियों पर क्यूंकर पहुंचाएगा ! लिहाज़ा ख़ुद भी नेकियां अपनाना, रिज़ाए इलाही पाना, अपने आप को गुनाहों से मह़फ़ूज़ बनाना, जहन्नम के हौलनाक अ़ज़ाबों से बचाना और रह़मते इलाही से जन्नतुल फ़िरदौस में जाना है और अपनी

प्यारी प्यारी औलाद को भी इसी डगर (या'नी राह) पर चलाना है। इस मक़्सद के हुसूल के लिये **दा'वते इस्लामी** का दीनी माहोल एक ज़बरदस्त ने'मत है। कुरआनो अहादीस और अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہِم की रौशनी में औलाद की तरबियत का त़रीक़ा जानने कि लिये **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की 188 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **''तरबियते औलाद''** का ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिये।

सूना जंगल रात अंधेरी, छाई बदली काली है
सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश स.185)

शर्ह़े कलामे रज़ा : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ के इस शे'र के मा'ना येह हो सकते हैं कि ऐ मुसल्मानो ! इस दुन्या का जंगल सुन्सान व वीरान है, रात भी घुप अंधेरी और ऊपर से काली घटा भी छाई हुई है, ऐसी ख़ौफ़नाक सूरते ह़ाल में अव्वल तो नींद आ नहीं सकती और अगर फिर भी सो चुके हो तो फ़ौरन जाग उठो क्यूं कि यहां के हिफ़ाज़त करने वाले तुम्हारी हिफ़ाज़त ख़ाक करेंगे येह तो ख़ुद ही लुटेरे हैं। या'नी ग़फ़्लतों और नफ़्सानी ख़्वाहिशों का हर त़रफ़ घटा टोप अंधेरा छाया हुवा है, येह नफ़्सो शैत़ान जो हर वक़्त तुहारे साथ लगे हुए हैं इन को अपना ख़ैर ख़्वाह मत समझ बैठना येह मुहाफ़िज़ नहीं बल्कि **चोर** हैं ख़बरदार ! होशियार !! जागते रहो !!! कहीं येह तुम्हारा **ईमान** न चुरा लें।

चन्द रोज़ा है येह दुन्या की बहार दिल लगा इस से न ग़ाफ़िल ज़ी नहार
उ़म्र अपनी यूं न ग़फ़्लत में गुज़ार होशियार ऐ महूवे ग़फ़्लत होशियार
एक दिन मरना है आख़िर मौत है कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

क्या बेटा भी कभी बाप को मारता है ?

तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में है कि "समरक़न्द" के एक आ़लिमे दीन ह़ज़रते **अबू ह़फ़्स** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : "मेरे बेटे ने मुझे मारा है।" उन्हों ने ह़ैरत से पूछा : क्या बेटा भी कभी बाप को मारता है ? उस ने कहा : जी हां ! ऐसा ही हुवा है। ह़ज़रते **अबू ह़फ़्स** رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने दरयाफ़्त किया : क्या आप ने इसे दीनी इ़ल्मो अदब सिखाया है ? उस शख़्स ने नफ़ी (या'नी इन्कार) में जवाब दिया। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पूछा : क़ुरआने करीम सिखाया है ? उस ने कहा : नहीं। फिर पूछा : तो वोह क्या करता है ? उस ने बताया खेतीबाड़ी करता है। ह़ज़रते अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जानते हैं कि उस ने आप को क्यूं मारा है ? कहा : नहीं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इस्लाह़ की ख़ातिर उस पर चोट करते हुए फ़रमाया : शायद वोह सुब्ह़ के वक़्त गधे पर सुवार हो कर जब खेत की त़रफ़ जा रहा होगा, बैल उस के आगे और कुत्ता उस के पीछे होगा, क़ुरआने पाक तो उसे पढ़ना आता नहीं कि कुछ रूह़ानिय्यत नसीब होती बस यूं ही ग़फ़्लत में कुछ गुनगुना रहा होगा, ऐसे में आप उस के सामने आ गए होंगे, उस ने समझा होगा कि बैल आड़े आ गया है और उस को हांकने के लिये सर पर कोई चीज़ दे मारी होगी ! शुक्र कीजिये कि आप का सर फटा नहीं।

(تنبیہ الغافلین، ص68)

महशर में पिटाई से बाप का गोश्त पोस्त झड़ जाएगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अपनी औलाद को इस्लामी तरबियत न देने वाले का अन्जाम ! आज भी बे शुमार बाप ऐसे मिलेंगे जिन्हें येह शिकायत होगी कि हमारी औलाद हमें गालियां सुनाती,

हम पर शोर मचाती, हमारी पिटाई लगाती और घर से निकाल देने की धम्कियां सुनाती है। बस मां बाप की दुन्या व आख़िरत की भलाई इसी में है कि ऐन शरीअ़त व सुन्नत के मुताबिक़ औलाद की तरबियत करें। वरना दुन्या अगर संवर भी गई तो आख़िरत में आ़फ़िय्यत का हुसूल दुश्वार हो जाएगा। औलाद की दुरुस्त तरबियत न करने वाले एक बाप के तअ़ल्लुक़ से एक लरज़ा खे़ज़ रिवायत समाअ़त फ़रमाइये चुनान्चे फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : मरवी है कि मर्द से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में पहले उस की ज़ौजा और उस की औलाद है, येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क़ियामत में) **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें इस शख़्स से हमारा ह़क़ दिला, क्यूं कि इस ने कभी हमें **दीनी उमूर की ता'लीम** नहीं दी और येह हमें **ह़राम** खिलाता था जिस का हमें इ़ल्म न था, फिर उस शख़्स को ह़राम कमाने पर इस क़दर मारा जाएगा कि उस का गोश्त झड़ जाएगा फिर उस को मीज़ान (या'नी तराज़ू) के पास लाया जाएगा, फ़िरिश्ते पहाड़ के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस के इ़याल (या'नी बाल बच्चों) में से एक शख़्स आगे बढ़ कर कहेगा : **''मेरी नेकियां कम हैं।''** तो वोह उस की नेकियों में से ले लेगा, फिर दूसरा आ कर कहेगा : **''तू ने मुझे सूद खिलाया था।''** और उस की नेकियों में से ले लेगा, इस त़रह़ उस के घर वाले उस की सब नेकियां ले जाएंगे और वोह अपने अहलो इ़याल की त़रफ़ ह़सरत व यास (या'नी रन्ज व मायूसी) से देख कर कहेगा : '' अब मेरी गरदन पर वोह गुनाह व मज़ालिम रह गए जो मैं ने तुम्हारे लिये किये थे।'' (उस वक़्त) फ़िरिश्ते कहेंगे : ''येह वोह (बद नसीब) शख़्स है जिस की नेकियां इस के घर वाले ले गए और येह उन (या'नी घर वालों) की वज्ह से जहन्नम में चला गया।''

(قرۃ العیون، ص401)

जो घर वालों की वज्ह से दीनी माहौल से दूर हो गए

न जाने कितने इस्लामी भाई ऐसे होंगे जिन्हों ने दा'वते इस्लामी से मुतअस्सिर हो कर दाढ़ी शरीफ़ सजाई होगी, दीगर फ़राइज़ व वाजिबात और सुन्नतों पर अ़मल की तरकीब बनाई होगी मगर घर वालों या किसी और की त़रफ़ से की जाने वाली मुख़ालफ़त के सबब दिल बरदाश्ता हो कर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे दीनी माहौल से दूर जा पड़े होंगे। ऐसों की ख़िदमतों में सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ की दस्त बस्ता इल्तिजा है कि दा'वते इस्लामी आप की अपनी सुन्नतों भरी तह़रीक है, बराए करम ! इस से पहले पहले पलट आइये कि मौत आप को दुन्या की रौनक़ों से उठा कर क़ब्र की तन्हाइयों में मुन्तक़िल कर दे और आप पर येह ह़सरत त़ारी हो जाए कि काश ! दुन्या में ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां कमा लेता। उठिये ! हिम्मत कीजिये ! गुनाहों से ह़िफ़ाज़त और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे दीनी माहौल से एक बार फिर वाबस्ता हो जाइये। हो सकता है अब मुख़ालफ़त न हो, या हो भी तो पहले से कम हो क्यूं कि वक़्त के साथ साथ ह़ालात व ख़यालात बदल जाते हैं, मगर याद रहे कि मुख़ालफ़त की सूरत में भी आप को नरमी नरमी और सिर्फ़ नरमी से काम लेना है और गुफ़्तार व किरदार और आ़दात व अत्वार में ऐसा मदनी इन्क़िलाब लाना है कि घर वाले ज़बाने ह़ाल से पुकार उठें : "वाह क्या बात है दा'वते इस्लामी की !" आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे

गिर गिर कर संभल गया

एक इस्लामी भाई ने जब दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से मुतअस्सिर हो कर दाढ़ी रखना शुरूअ़ की तो घर में दीनी माहौल न होने

की वज्ह से ऐसी मुख़ालफ़त हुई कि مَعَاذَاللہ कटवाते ही बनी मगर इन्हों ने दा'वते इस्लामी से अपना नाता नहीं तोड़ा । सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में गाहे गाहे ह़ाज़िरी देता रहा, इस से गोया मेरी "बैटरी चार्ज" होती रही और नमाज़ों की पाबन्दी जारी रही। कुछ अ़र्सा गुज़रने के बा'द फिर जज़्बे ने उठान ली, ज़ेह्न बना और उन्हों ने दोबारा **दाढ़ी** बढ़ानी शुरूअ़ की, फिर मुख़ालफ़त शुरूअ़ हो गई, इस मर्तबा पहले के मुक़ाबले में जियादा अ़र्सा मुख़ालफ़त झेली मगर फिर हिम्मत हार गए और اَسْتَغْفِرُاللہ उन्हों ने दाढ़ी कटवा दी। बिल आख़िर हिम्मत कर के तीसरी बार उन्हों ने **दाढ़ी** का आग़ाज़ कर दिया, अब की बार घर वालों की त़रफ़ से सिर्फ़ बराए नाम मुख़ालफ़त की गई और اَلْحَمْدُلِلّٰہ वोह दाढ़ी बढ़ाने में काम्याब हो गए। यहां तक कि सर पर इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया और दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में रच बस गए और दीनी काम भी शुरूअ़ कर दिया। आज (ता दमे तह़रीर) तक़्रीबन 14 साल होने को आए हैं, दाढ़ी शरीफ़ ब दस्तूर उन के चेहरे पर और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज मौजूद है, **अल्लाह** पाक येह सुन्नतें **क़ब्र** में भी साथ ले जाने की सआ़दत इनायत फ़रमाए । आमीन। (उन का कहना है कि) आज वोह सोचते **हैं** कि अगर दाढ़ी मुंडाने की ह़ालत में मौत आ जाती तो क्या बनता ! **अल्लाह** पाक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे दीनी माहोल को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए, जिस ने तबाही की तंग गली से निकाल कर जन्नत की शाहराह पर गामज़न कर दिया और ज़ाहिरो बात़िन पर ऐसा मदनी रंग चढ़ाया कि अब घर वाले बल्कि दीगर रिश्तेदार भी **दा'वते इस्लामी** की बरकतों के क़ाइल हो चुके हैं।

अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा तुम आ जाओ देगा सिखा दीनी माहौल
तू दाढ़ी बढ़ा ले इमामा सजा ले नहीं है येह हरगिज़ बुरा दीनी माहौल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللّٰه तुम अपनाए रख्खो सदा दीनी माहौल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मौत के बा'द की होशरुबा मन्ज़र कशी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! और ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! येह अ़हद कीजिये : ख़्वाह कितनी ही सख़्तियां सहनी पड़ें मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे पर मुस्तक़िल सजानी और क़ब्र में भी साथ ले जानी है। याद रहे ! दाढ़ी मुंडवाना और एक मुठ्ठी से घटाना दोनों ह़राम है। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के रिसाले, ''काले बिच्छू'' सफ़ह़ा 4 से शुरूअ़ होने वाला दिल हिला देने वाला मज़मून बित्तसर्रुफ़ पेश किया जाता है बगोशे होश सुनिये : ऐ ग़ाफ़िल इस्लामी भाई ! ज़रा होश कर !! मरने के बा'द तेरी एक न चलेगी, तेरे नाज़ उठाने वाले तेरे कपड़े भी उतार लेंगे। तू कितना ही बड़ा सरमाया दार सही, तुझे वोही कोरे लठ्ठे का कफ़न पहनाएंगे जो फ़ुटपाथ पर दम तोड़ने वाले ला वारिस को पहनाया जाता है। तेरी कार है तो वोह भी गैरेज (GARAGE) में खड़ी रह जाएगी। तेरे बेश क़ीमत लिबास सन्दूक़ में धरे रह जाएंगे। तेरा माल व मताअ़ और ख़ून पसीने की कमाई पर वुरसा क़ाबिज़ हो जाएंगे। ''अपने'' अश्क बहा रहे होंगे, ''बेगाने'' (या'नी पराए) ख़ुशियां मना रहे होंगे। तेरे नाज़ उठाने वाले तुझे अपने कन्धों पर लाद कर चल देंगे और एक ऐसे वीराने में ले जाएंगे कि तू कभी इस हौलनाक सन्नाटे में ख़ुसूसन रात

के वक़्त एक घड़ी के लिये भी तन्हा न आया था न आ सकता था बल्कि इस के तसव्वुर से ही कांप जाया करता था। अब गढ़ा खोद कर तुझे मनों मिट्टी तले दफ़्न कर के तेरे सारे अ़ज़ीज़ चल देंगे, तेरे पास एक रात कुजा एक घन्टा भी ठहरने के लिये कोई राज़ी न होगा। ख़्वाह तेरा चहीता बेटा ही क्यूं न हो, वोह भी भाग खड़ा होगा। तू ह़सरत भरी निगाहों से अ़ज़ीज़ों और दोस्तों को निगाहों सो ओझल होता देख रहा होगा, दिल डूबता जा रहा होगा। इतने में दो ख़ौफ़नाक शक्लों वाले फ़िरिश्ते (मुन्कर व नकीर) अपने लम्बे लम्बे दांतों से क़ब्र की दीवारें चीरते हुए तेरे सामने आ मौजूद होंगे, उन की आंखों से आग के शो'ले निकल रहे होंगे, काले काले मुहीब (या'नी हैबत नाक) बाल सर से पांव तक लटक रहे होंगे, तुझे झिड़क कर बिठाएंगे, करख़्त (या'नी निहायत ही सख़्त) लहजे में इस त़रह़ सुवालात करेंगे : ''مَنْ رَّبُّكَ ؟'' (या'नी तेरा रब कौन है ?) ''مَادِيْنُكَ؟'' (या'नी तेरा दीन क्या है ?) इतने में तेरे और मदीने के दरमियान ह़ाइल शुदा तमाम पर्दे उठा दिये जाएंगे किसी की ह़सीन व दिलरुबा और प्यारी प्यारी सूरत सामने आ जाएगी, या वोह अ़ज़ीम और प्यारी हस्ती ख़ुद तशरीफ़ ले आएगी। क्या अ़जब ! तेरी आंखें शर्म से झुक जाएं ! हो सकता है कि तू सोच में पड़ जाए कि निगाहें उठाऊं तो कैसे उठाऊं ! अपनी बिगड़ी हुई सूरत दिखाऊं तो कैसे दिखाऊं ! येह वोही तो मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं जिन का मैं कलिमा पढ़ा करता था, अपने आप को इन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ग़ुलाम भी कहता था, लेकिन मैं ने **मह़ब्बते** रसूल की निशानी अपनी दाढ़ी शरीफ़ के साथ येह क्या किया ! प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो येह फ़रमाया : ''मूंछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो और यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ ।''

(شرح معانی الآثار للطحاوی،4/28) लेकिन हाए मेरी बद बख़्ती ! मैं चन्द रोज़ा दुन्या की ज़ीनत में खो गया, **फ़ैशन** ने मेरा सत्तियानास कर दिया, आह ! आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सख़्ती से मन्अ़ करने के बा वुजूद मैं ने दाढ़ी मुंडवा कर अपना चेहरा यहूदियों या'नी मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों जैसा बनाए रखा ! हाए ! अब क्या होगा ! कहीं ऐसा न हो कि मेरी बिगड़ी हुई शक्ल देख कर सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुंह फेर लें और येह फ़रमा दें कि "येह तो मेरे दुश्मनों वाला चेहरा है मेरे ग़ुलामों वाला नहीं !!" अगर ख़ुदा ना ख़्वास्ता ऐसा हुवा तो सोच उस वक़्त तुझ पर क्या गुज़रेगी !

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा की क़सम अगर नबी ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

ऐसा नहीं होगा, اِنْ شَآءَاللّٰہ हरगिज़ नहीं होगा। अभी तू ज़िन्दा है, मान जा ! अपने कमज़ोर बदन पर तरस खा ! झटपट उठ हिम्मत कर ! अंग्रेज़ी फ़ैशन और फ़िरंगी तहज़ीब को तीन त़लाक़ें दे डाल और अपना चेहरा प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा सुन्नत से आरास्ता कर ले और एक मुठ्ठी दाढ़ी सजा ले। हरगिज़ हरगिज़ शैत़ान के इस फ़रेब में न आ और इन वसावस की त़रफ़ तवज्जोह मत ला, कि "अभी तो मैं इस क़ाबिल नहीं हुवा, मेरी तो उ़म्र ही क्या है ? मेरा इ़ल्म भी इतना कहां है ! अगर किसी ने दीन के बारे में सुवाल कर दिया तो मुझे जवाब नहीं आएगा मैं तो जब क़ाबिल हो जाऊंगा उस वक़्त दाढ़ी रखूंगा।" याद रख ! येह शैत़ान का काम्याब तरीन वार है कि इन्सान अपने बारे में येह समझ बैठे कि "हां ! अब मैं क़ाबिल हो गया हूं।" याद रखिये ! अपने आप को "क़ाबिल" समझना येही "ना क़ाबिलिय्यत" की सब से बड़ी दलील है। आ़जिज़ी इख़्तियार कर ! बड़े बड़े उ़लमाए किराम भी हर सुवाल का

जवाब नहीं देते तो क्या हर सुवाल का जवाब देने की तू ने कोई ज़िम्मेदारी ले रखी है ? नफ़्स की हीला बाज़ियों में मत आ ! और मान जा, ख़्वाह मां रोके, बाप मन्अ़ करे, मुआ़शरा आड़े आए, शादी में रुकावट खड़ी हो। कुछ ही हो जाए **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मानना मानना और मानना ही है, तसल्ली रख ! आगर जोड़ा लौहे महफ़ूज़ पर लिखा हुवा है तो तेरी शादी हो कर रहेगी और अगर नहीं लिखा तो दुन्या की कोई ताक़त तेरी शादी नहीं करवा सकती। ज़िन्दगी का क्या भरोसा ?

दाढ़ी मुंडवाते ही मौत

किसी ने सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ (राक़िमुल हुरूफ़) को कुछ इस तरह का वाक़िआ़ सुनाया था कि बंगलादेश में एक नौ जवान ने दाढ़ी रखी थी, जब उस की शादी का वक़्त क़रीब आया तो वालिदैन ने दाढ़ी मुंडवाने पर मजबूर किया। बा दिले ना ख़्वास्ता (या'नी न चाहते हुए भी) नाई के पास जा कर दाढ़ी मुंडवा कर घर की तरफ़ आते हुए सड़क उ़बूर कर रहा था कि किसी तेज रफ़्तार गाड़ी ने कुचल कर रख दिया, उस का दम निकल गया और उस की शादी के अरमान ख़ाक में मिल गए, मां बाप न बचा सके ! न शादी हुई न दाढ़ी रही। तो प्यारे इस्लामी भाई ! होश में आ ! **अल्लाह** पाक पर भरोसा कर के आज ही दाढ़ी मुंडवाने से तौबा कर के अ़ह्द कर ले कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत में गरदन तो कट सकती है मगर अब मेरी दाढ़ी दुन्या की कोई ताक़त मुझ से जुदा नहीं कर सकती। शाबाश.....! मुबारक.....! मुबारक.....! मुबारक.....!!!

उन का दीवाना इ़मामा और ज़ुल्फ़ो रीश में वाह ! देखो तो सही लगता है कितना शानदार

(वसाइले बख़्शिश, स. 399)

दाढ़ी मुन्डों से आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नफ़रत का इब्रतनाक वाक़िआ़

सगे ईरान ख़ुस्रौ (परवेज़) के पास ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه के हाथ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल नामए मुबारका (या'नी मक्तूब शरीफ़) पहुंचा तो इस गुस्ताख़े रसूल ने मक्तूबे वाला को देखते ही ग़ुस्से से शहीद कर डाला और उस बद ज़बान ने बका : (.....परवेज़ का बे अदबाना जुम्ला नक़्ल करने की हिम्मत नहीं, लिहाज़ा ह़ज़्फ़ किया जाता है.....) इस के बा'द सगे ईरान ख़ुस्रौ (परवेज़) ने **बाज़ान** को जो **यमन** में उस का गवर्नर था और **अ़रब** का तमाम मुल्क उस के ज़ेरे इक़्तिदार समझा जाता था येह हुक्म भेजा कि..... (यहां पर भी सगे ईरान परवेज़ की बक्वास ह़ज़्फ़ की जाती है) **बाज़ान** ने एक फ़ौजी दस्ता मामूर किया, जिस के अफ़्सर का नाम **ख़र ख़स्सरह** था। नीज़ **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के असरो रुसूख़ पर गहरी नज़र डालने के लिये एक मुल्की अफ़्सर भी उस के साथ किया जिस का नाम **बान्विया** था। येह दोनों अफ़्सरान जिस वक़्त **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पेश किये गए तो रो'बे **नुबुव्वते मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वज्ह से उन की गरदन की रगें थरथरा रही थीं। **येह लोग चूंकि आतश परस्त (पारसी) थे। इस लिये दाढ़ियां मुंडी हुई और मूंछें इस क़दर बढ़ी हुई थीं कि उन से उन के लब ढके हुए थे** और अपने बादशाह परवेज़ को "रब" कहा करते थे। उन के चेहरे देख कर **प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ पहुंची, कराहत (या'नी बेज़ारी) के साथ फ़रमाया : "**तुम पर हलाकत हो** कि ऐसी सूरत बनाने का तुम से किस ने कहा है ?" उन्हों ने जवाब

दिया : "हमारे रब परवेज़ ने।" **प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **"मगर मेरे रब ने तो मुझे येह हुक्म दिया है कि दाढ़ी बढ़ाऊं और मूंछें कतरवाऊं।"** (تاریخ الخمیس، 35/2, फ़तावा रज़विय्या, 22/647, मुलख़्ख़सन)

क़ियामत का दिल हिला देने वाला मन्ज़र

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए पर ग़ौर फ़रमाइये ! समझ में न आया हो तो दोबारा पढ़िये ! ख़ूब ग़ौर कीजिये ! दो ऐसे अश्ख़ास जो अभी ग़ैर मुस्लिम हैं मुसल्मान नहीं हुए। अह़कामे शरीअ़त से ना वाक़िफ़ भी हैं। मगर चूंकि उन्हों ने फ़ित़री वज़्अ़ के साथ ज़ियादती की, चेहरे के क़ुदरती हुस्न को बरबाद किया। सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़ते मुबारका को उन का येह (या'नी दाढ़ी मुंडाने का) फे'ल इन्तिहाई ना गवार गुज़रा और बा वुजूद रह़मतुल्लिल आ़लमीन होने के फ़रमाया : "तुम पर हलाकत हो।" ज़रा सोचिये ! ग़ौर कीजिये ! जब मैदाने क़ियामत में सब जम्अ़ होंगे, नफ़्सी नफ़्सी का आ़लम होगा, मां अपने बेटे से और बेटा अपने बाप से भाग रहा होगा, उस वक़्त एक ही तो ज़ाते पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم होगी जो आ़सियों की उम्मीद गाह होगी, उसी सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में सब को ह़ाज़िरी देनी होगी। याद रखिये ! जो जिस ह़ाल में मरेगा, उसी ह़ाल में क़ियामत के रोज़ उठाया जाएगा। दाढ़ी वाला, दाढ़ी के साथ उठेगा और दाढ़ी मुन्डा, दाढ़ी मुन्डा ही उठेगा।

ऐ मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत को अपने चेहरे से दूर करने वालो ! अगर प्यारे सरकार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप से इस्तिफ़्सार फ़रमा लिया : "क्या तुम मुझ से मह़ब्बत करते रहे हो ?" ज़ाहिर

है इन्कार तो कर ही नहीं सकते येही अ़र्ज़ करेंगे : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ही हमारे सब कुछ हैं, हम आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने मां बाप, माल व औलाद सब से अ़ज़ीज़ तर समझते हैं । सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम तो दुन्या में झूम झूम कर अ़र्ज़ किया करते थे :

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम ! मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमारी बेताबी का आ़लम तो येह था कि बे क़रार हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा करते थे :

ग़ुलामे मुस्त़फ़ा बन कर मैं बिक जाऊं मदीने में मुह़म्मद नाम पर सौदा सरे बाज़ार हो जाए

ऐ आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब **मह़ब्बत** कुछ ज़ियादा ही जोश मारती थी तो येह तक कह देते थे :

जान भी मैं तो दे दूं ख़ुदा की क़सम ! कोई मांगे अगर मुस्त़फ़ा के लिये !

येह सब कुछ सुन कर (**अल्लाह** पाक न करे) आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बिलफ़र्ज़ येह इर्शाद फ़रमाएं : ऐ मेरे ग़ुलामो ! अगर वाक़ेई तुम मुझे मां बाप और माल व औलाद सब से अ़ज़ीज़ तर समझते थे और सिर्फ़ मेरी ही ख़ातिर दुन्या में ज़िन्दा थे । नीज़ मेरे नाम पर बिकने बल्कि जान तक देने के लिये तय्यार थे तो फिर आख़िर क्या वज्ह थी कि शक्लो सूरत मेरे दुश्मनों जैसी बनाए फिरते थे ? क्या तुम्हें मेरे येह इर्शादात न पहुंचे थे कि ﴾1﴿ "मूंछें ख़ूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआ़फ़ी दो (या'नी इन को बढ़ने दो) और यहूदियों की सी सूरत मत बनाओ।" (شرح معانی الآثار للطحاوی، 4/28) ﴾2﴿ "जो मेरी सुन्नत इख़्तियार करे वोह मेरा और जो मेरी सुन्नत से मुंह फेरे वोह मेरा नहीं।" (تاریخ ابن عساکر، 38/127) ﴾3﴿ "जो मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे वोह मुझ से नहीं।" (ابن ماجہ، 2/406، حدیث:1846)

अगर आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो.....!

फ़ैशन पर मर मिटने वालो ! येह इर्शादाते आ़लिया याद दिलाने के बा'द अगर ख़ुदा ना ख़्वास्ता हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए तो आप क्या करेंगे ? किस के दरवाज़े पर फ़रियाद करेंगे ? किस के दरवाज़े पर शफ़ाअ़त की भीक लेने जाएंगे ? कौन **अल्लाह** पाक के क़हरो ग़ज़ब से बचाने वाला होगा ? अभी मौक़अ़ है, जब तक सांस बाक़ी है वक़्त है, झटपट तौबा कर लीजिये, अपना चेहरा प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत से आरास्ता कर लीजिये, अपने रुख़ पर महब्बत की निशानी सजा लीजिये। येह ख़ुश फ़हमी ख़त्म कर दीजिये कि अभी तो उ़म्र ही क्या है ? बा'द में रख लेंगे, शादी के बा'द देखी जाएगी ! भोले भाले इस्लामी भाइयो ! शैत़ान के चक्कर में मत आइये ! वोह कैसे ही क़रीबी अ़ज़ीज़ की ज़बानी तुम्हें येह बावर करवाने की कोशिश करे कि अभी तुम्हारी उ़म्र दाढ़ी रखने जितनी नहीं हुई है, बा'द में रख लेना। यक़ीन मानिये येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है, इस वार से उस मरदूद ने न जाने कितनों को तबाह कर दिया। आइये ! आप को एक इ़ब्रतनाक वाक़िआ़ सुनाऊं।

मरने से पहले शामत

एक नौ जवान कमो बेश साल भर "दा'वते इस्लामी" के सुन्नतों भरे दीनी माहोल से वाबस्ता रहा और दाढ़ी भी सजा ली। फिर न जाने क्या सूझी ! शायद बुरे दोस्त मिल गए। مَعَاذَاللّٰه दाढ़ी साफ़ करवा दी। शबे जुमुआ़ को हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ग़ैर ह़ाज़िर रहा। जुमुआ़ के रोज़ दोस्तों के साथ साह़िले समुन्दर पर पिकनिक मनाने के लिये गया। और आह ! दाढ़ी मुंडवाने के सिर्फ़ 15 दिन के बा'द बेचारा समुन्दर में डूब कर मौत के घाट उतर गया।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे
हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे !
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

फ़ैशन परस्तों की सोहबत की नुहूसत

उस मर्हूम नौ जवान की उम्र तक़रीबन बीस साल होगी, क्या उम्र थी ! बक़ौल कसे शायद दाढ़ी रखने की अभी उम्र ही नहीं आई थी ! कहीं इस लिये तो इन्तिक़ाल से सिर्फ़ पन्दरह दिन पहले दाढ़ी साफ़ नहीं करवा दी थी ! नहीं हरगिज़ नहीं, बस बेचारे के नसीब ! बुरी सोहबत का असर ! **अल्लाह** पाक ! मर्हूम की मग़्फ़िरत करे । येह डूबने वाला नौ जवान हम सब को उबारने के लिये बहुत कुछ सामाने इब्रत छोड़ गया ! जो कोई दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से दूर होने का ख़याल करे या सैरो तफ़रीह के शाएक़ीन से दोस्ती का रिश्ता जोड़े, उसे चाहिये कि इस इब्रतनाक वाक़िए पर अच्छी तरह ग़ौर कर ले कि कहीं मैं भी दूसरों के लिये सामाने इब्रत न बन जाऊं ! कहीं ऐसा न हो कि मेरे येह फ़ैशन परस्त दोस्त ख़ुद भी डूबें और मुझे भी ले डूबें ! और ग़ौर करे कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी ज़िन्दगी के दिन पूरे होने को आ गए हैं और इसी वज्ह से शैतान अपना पूरा ज़ोर मुझ पर लगा रहा है, कहीं चन्द रोज़ की बुरी सोहबत की नुहूसत के ज़रीए वोह मेरी ज़िन्दगी भर की कमाई पर पानी न फेर दे । बे नमाज़ियों और फ़ासिक़ों की **सोहबतों** में बैठने वालो ! ख़बरदार !!! रब्बुल अनाम पारह 7 **सूरतुल अन्आम** आयत नम्बर 68 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ ।

दाढ़ी सिर्फ़ मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द की रखो

ऐ मदनी महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चाहने वालो ! मान जाओ ! अपनी जवानी पर मत इतराओ ! दुन्यवी मजबूरियों को ह़ीला मत बनाओ, आओ ! आओ ! ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आओ ! रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम ले लिपट जाओ ! इन के परवर दगार, रब्बे ग़फ़्फ़ार से भी मग़्फ़िरत की भीक त़लब कर लो। इन से भी मुआ़फ़ी मांग लो ! येह बारगाह करम वाली बारगाह है, यहां से कोई साइल मायूस नहीं जाता, सुन्नत की ख़ैरात ले लो, अपने चेहरे से दुश्मने ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की नुहूसत की अ़लामत को हमेशा हमेशा के लिये धो डालो और प्यारी प्यारी सुन्नत चेहरे पर सजा लो। और हां ! ख़याल रखना ! शैत़ान बड़ा मक्कार व अ़य्यार है, कहीं ऐसा न हो कि आप अंग्रेज़ों और यहूदियों से तो दामन छुड़ा लें और दाढ़ी भी सजा लें मगर शैत़ान दूसरे ज़ाविये से फिर घेर ले और आप को फ़्रान्सीसियों के क़दमों में पटख़ दे। मत़लब येह कि कहीं "फ़्रेन्च कट" या'नी ख़श्ख़शी दाढ़ी न रख लेना कि दाढ़ी मुंडाना और कतरवा कर एक मुठ्ठी से छोटी कर देना दोनों ही ह़राम है। दाढ़ी रखिये और ज़रूर रखिये मगर प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द की रखिये या'नी एक मुठ्ठी पूरी रखिये।

दाढ़ी मुन्डे की 30 शामतें

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 22 में दाढ़ी मुंडाने और एक मुठ्ठी से घटाने की मज़म्मत में "لَمْعَةُ الضُّحٰى فِى اِعفَاءِ اللِّحٰى" नामी एक रिसाला है और उस रिसाले के इख़्तिताम पर या'नी फ़तावा रज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 675 ता 676 पर दाढ़ी मुंडाने और एक मुठ्ठी से घटाने वालों के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में 30 सज़ाओं, वईदों और मज़म्मतों की फ़ेहरिस

दर्ज फ़रमाई है : (बख़ौफ़े त़वालत ह़वाले ह़ज़्फ़ कर दिये हैं, जिन्हें देखना हो वोह वहीं से देख लें) ❀ दाढ़ी मुंडाने वाले **अल्लाह व रसूल** جَلَّ جَلَالُہٗ و صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ना फ़रमान हैं ❀ शैत़ाने लईन के मह़कूम (या'नी मा तह़त) हैं ❀ सख़्त अह़मक़ हैं ❀ **अल्लाह** (पाक) उन से बेज़ार है ❀ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेज़ार हैं ❀ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसी सूरत देखने से कराहत आती है ❀ यहूदी सूरत हैं ❀ नस्रानी वज़्अ़ हैं फ़िरंगियों से मुशाबेह (या'नी मिलते जुलते हैं) ❀ मजूस (आतश परस्तों) के पैरो (या'नी नक़्शे क़दम पर) हैं ❀ हिन्दुओं की सूरत, मुश्रिकीन की सीरत हैं ❀ मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के गुरौह से नहीं ❀ उन्हें (उन ही) अपने हम सूरतों नसारा व यहूद व **मजूस** व हुनूद के गुरौह से हैं ❀ **वाजिबुत्ता'ज़ीर** (या'नी लाइक़े सज़ा) हैं शहर बदर करने के क़ाबिल हैं ❀ **मुबद्दिलीने** फ़ित़रत (या'नी फ़ित़रत बदलने वाले) हैं **मुग़य्यिरे ख़ल्क़िल्लाह** (या'नी **अल्लाह** के बनाए हुए को बिगाड़ने वाले) हैं ❀ ज़नाने **मुख़न्नस** (या'नी हिजड़े) हैं ❀ ख़ुदा के अ़ह्द शिकन (वा'दा ख़िलाफ़) हैं ❀ ज़लीलो ख़्वार हैं ❀ घिनौने क़ाबिले नफ़रत हैं ❀ मरदूदुश्शहादह (या'नी गवाही के लिये ना लाइक़) हैं ❀ पूरे इस्लाम में दाख़िल न हुए ❀ हलाकत में हैं, मुस्तह़िक़े बरबादी हैं ❀ दीन में बे बहरा (मह़रूम) आख़िरत में बे नसीब हैं ❀ अ़ज़ाबे इलाही के मुन्तज़िर ❀ **अल्लाह** पाक को सख़्त दुश्मन व **मबग़ूज़** हैं ❀ सुब्ह़ हैं तो **अल्लाह** पाक के ग़ज़ब में, शाम हैं तो **अल्लाह** के ग़ज़ब में ❀ क़ियामत के दिन उन की सूरतें बिगाड़ी जाएंगी ❀ **अल्लाह व रसूल** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मल्ऊ़न हैं, दुन्या व आख़िरत में मल्ऊ़न (ला'नत किये गए) हैं, **अल्लाह** व मलाएका व बशर (इन्सान) सब की उन पर ला'नत है, फ़िरिश्तों ने उन के ला'नती होने पर आमीन कही ❀ **अल्लाह**

पाक उन पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा ❀ वोह बिहिश्त (या'नी जन्नत) में न जाएंगे ❀ **अल्लाह** पाक उन्हें जहन्नम में डालेगा। وَالْعِیاذُ بِاللّٰہِ تعالٰی (या'नी और (इस से) **अल्लाह** पाक की पनाह)

मक्रे शैत़ां में मत आओ भाइयो ! रुख़ पे तुम दाढ़ी सजाओ भाइयो !
छोड़ो फ़ैशन मान जाओ भाइयो ! ख़ुद को दोज़ख़ से बचाओ भाइयो !
बिल यक़ीं दुन्या बड़ी है बे वफ़ा इस से तुम मत दिल लगाओ भाइयो !

मैं निहायत ही बिगड़े हुए किरदार का मालिक था

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयों ! महब्बते रसूल की निशानी दाढ़ी बढ़ाने का जज़्बा पाने, सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाने का शौक़ बढ़ाने, जज़्बए इश्क़े रसूल से सरशार हो कर ज़ुल्फ़ें रखाने की सुन्नत अपनाने का ज़ौक़ निभाने, सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास सजाने पर इस्तिक़ामत पाने और क़ुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहौल से हर दम वाबस्ता रहिये। सुन्नतों भरे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये और नेक आ'माल के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये। आप की तह़रीस के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है। एक इस्लामी भाई दीनी माहौल से वाबस्तगी से क़ब्ल निहायत ही बिगड़े हुए किरदार के मालिक थे, रात गए तक दोस्तों के झुरमट में ख़ुश **गप्पियों** में मसरूफ़ रहते, न तो वालिदैन की इ़ज़्ज़त का पास था और न ही अपने क़ीमती वक़्त के ज़ियाअ़ (या'नी ज़ाएअ़ होने) का एह़सास, इन की ज़िन्दगी के चारों त़रफ़ ग़फ़्लतों का पहरा था। घर वाले इन की ह़रकतों की वज्ह से सख़्त परेशान, इन्हें सुधारने की तगो दौ में लगे रहते क्यूं कि नेक औलाद से मुआ़शरे में वालिदैन की भी नेक नामी होती है। एक रोज़ इन के भाई ने एक

आ़शिक़े रसूल से इन की मुलाक़ात करवाई, उन्हों ने निहायत मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की और मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में दाख़िला लेने की रग़्बत दिलाई नीज़ अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल की बरकतें और फ़ज़ीलतें बताईं। उन की भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश ने दिल पर गहरा असर डाला और वोह इन्कार न कर सके। इन्हों ने मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में मुझे दुरुस्त मख़ारिज से हुरूफ़ की अदाएगी के साथ कुरआने मजीद फुरक़ाने ह़मीद पढ़ने की सआ़दत मिली और सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से दीन से ऐसी मह़ब्बत पैदा हो गई कि आज के बिगड़े हुए ह़ालात में जब कि चहार सू फ़ैशन परस्ती का दौर दौरा है, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाए न सिर्फ़ खुद सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश कर रहे हैं बल्कि सुन्नतों के परचार के भी कोशां (या'नी कोशिश करने वाले) हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ता दमे तह़रीर इन्हें ज़ैली मुशावरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से दीनी कामों की ज़िम्मेदारी मिली हुई है।

बुरी सोह़बतों से कनारा कशी कर के — अच्छों के पास आ के पा मदनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की — तरक़्क़ी का बाइ़स बना मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के जामिआ़त व मदारिस की ता'दाद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मदनी बहार में इन्फ़िरादी कोशिश और **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) की बरकतें नुमायां हैं कि जिन की वज्ह से एक औबाश नौ जवान राहे सुन्नत पर चल कर दूसरों को चलाने वाला बना । तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से मेरी मदनी इल्तिजा है कि अपने अपने **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान व बालिग़ात) में ज़रूर दाख़िला लें और क़ुरआने करीम न पढ़े हों तो पढ़ें और अगर तज्वीद के साथ पढ़े हुए हों तो अपने तन्ज़ीमी ज़िम्मेदार से तरकीब बना कर दूसरों को पढ़ाएं । اَلْحَمْدُلِلّٰه मेरी मा'लूमात के मुताबिक़ ता दमे तह़रीर (14 रमज़ानुल मुबारक 1432 हि./ 15 अगस्त 2011 ई.) बराए ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा मदनी मुन्नों के तक़रीबन **766** और मदनी मुन्नियों के तक़रीबन **316** मदारिसुल मदीना चलाए जा रहे हैं जिन में बच्चों और बच्चियों की मिला कर कुल ता'दाद तक़रीबन **72000** है । नीज़ इस्लामी भाइयों के **मद्रसतुल मदीना** बालिग़ान (उ़मूमन वक़्त : बा'दे इ़शा दौरानिया : तक़रीबन 40 मिनट) की ता'दाद तक़रीबन **3316** है और इस्लामी बहनों के **मद्रसतुल मदीना** बालिग़ात (उ़मूमन वक़्त : सुब्ह़ 8:00 से ले कर अ़स्र तक मुख़्तलिफ़ अवक़ात में, दौरानिया : 1 घन्टा 12 मिनट) की ता'दाद तक़रीबन **3938** है । नीज़ (10 रजबुल मुरज्जब 1432 हि. । 12-6-2011) इस्लामी भाइयों के दर्से निज़ामी के जामिआ़तुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन **90** और इस्लामी बहनों के जामिआ़तुल मदीना की ता'दाद तक़रीबन **72** है, **त़लबा की ता'दाद तक़रीबन 6671 और त़ालिबात की** ता'दाद तक़रीबन 2841

है ।[1] इन तमाम जामिअ़तुल मदीना (ब्वॉयज़ एंड गर्ल्ज़) और मदारिसुल मदीना (ब्वॉयज़ एंड गर्ल्ज़) में मुफ़्त ता'लीम दी जाती है और इन के अख़्राजात मुख़्य्यिर इस्लामी भाइयों के अ़तिय्यात से पूरे किये जाते हैं। हर मुसल्मान को दुरुस्त कुरआने करीम पढ़ना और फ़र्ज़ दीनी उ़लूम से आश्ना (या'नी वाक़िफ़) होना ज़रूरी है।

ता'लीमे कुरआने करीम के मुतअ़ल्लिक़ दो अहम मदनी फूल

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल" सफ़्ह़ा 545 ता 546 पर है : ﴾1﴿ एक आयत का ह़िफ़्ज़ करना हर मुसल्मान मुकल्लफ़ (या'नी आ़क़िल व बालिग़) पर फ़र्ज़े ऐ़न है और पूरे कुरआने मजीद का ह़िफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया और **सूरए फ़ातिह़ा** और एक दूसरी छोटी सूरत या उस के मिस्ल, मसलन तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का ह़िफ़्ज़, वाजिबे ऐ़न है। (دُرِّمختار ج۲ص۳۱۵) ﴾2﴿ ब क़दरे ज़रूरत मसाइले फ़िक़्ह का जानना फ़र्ज़े ऐ़न है और ह़ाजत से ज़ाइद (मसाइल) सीखना ह़िफ़्ज़े जमीअ़ कुरआन (या'नी ह़ाफ़िज़े कुरआन बनने) से अफ़्ज़ल है। (رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص۳۱۵)

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आ़म हो जाए तिलावत करना अपना काम सुब्ह़ो शाम हो जाए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

[1]...... اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الْكَرِيم ! जून 2023 के मुत़ाबिक़ आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदारिसुल मदीना (ब्वॉयज़, गर्ल्ज़) की ता'दाद कमो बेश 14290 है जिन में पढ़ने वाले बच्चे और बच्चियों की ता'दाद 456773 है, इन मदारिस से ह़िफ़्ज़ुल कुरआन मुकम्मल करने वाले बच्चे और बच्चियों की ता'दाद 1,17,588 है, नाज़िरा कुरआन की तक्मील करने वाले बच्चे और बच्चियों की ता'दाद 4,76,321 है, जब कि ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा मुकम्मल करने वालों की मज्मूई ता'दाद 5,93,909 है। इसी त़रह जामिअ़तुल मदीना (ब्वॉयज़, गर्ल्ज़) की ता'दाद कमो बेश 1,350 है, इन में पढ़ने वाले त़लबा व त़ालिबात की ता'दाद 1,18, 613 है, जब कि फ़ारिग़ुत्तह़सील होने वाले त़लबा व त़ालिबात की ता'दाद 28,529 है।

अगले हफ़्ते का रिसाला

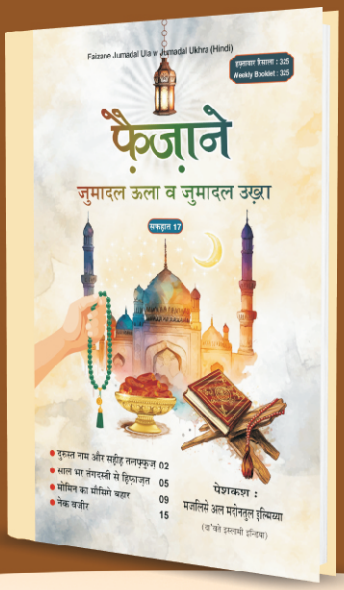

Faizane Jumadal Ula w Jumadal Ukhra (Hindi)
हफ़्तावार रिसाला : 325
Weekly Booklet : 325
फ़ैज़ाने
जुमादल ऊला व जुमादल उख़रा
सफ़हात 17
दुरुस्त नाम और सहीह तलफ़्फ़ुज़ 02
साल भर तंगदस्ती से हिफ़ाज़त 05
मोमिन का मौसिमे बहार 09
नेक वज़ीर 15
पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)